देश और इंसानियत को बचाना है तो सांप्रदायिकता से लड़ना होगा

आज देश बहुत नाजुक और दुखद दौर से गुजर रहा है। 6 दिसंबर 1992 की अयोध्या की बेहद दुखद घटना के बाद लगभग एक सप्ताह गुजर चुका है और इस दौरान भड़की हिंसा में एक हजार से अधिक लोगों की मृत्यु हो चुकी है। न जाने कितने हजार लोग घायल हुये हैं और कितने लाख परिवारों की आजीविका स्थायी या अस्थायी तौर पर तहस-नहस हुई है। यह सोचते ही दिल व्याकुल होता है कि इतनी बड़ी संख्या में लोग हिंसा की दहशत में रहे हैं या क्फ्र्यू के साये में सिमटे रहे हैं। किसी परिवार के घायल सदस्य का इलाज नहीं हो पा रहा, उधर बाहर क्फ्र्यू लग गया है या दंगईयों की दहशत फैली हुई है। किसी गरीब परिवार में बच्चा बीमार है और दवा-दारु तो क्या, क्फ्र्यू के कारण रोजी से वंचित रहने के कारण घर में खाने को रोटी तक नहीं है, कितने ही परिवार ऐसे भी है जिनकी रोजी-रोटी को इतना गहरा धक्का लगा है कि हिंसा खत्म होने के बाद भी कई महीनों तक उन्हें फाके करने पड़ेंगे।

सबसे दुख की बात तो यह है कि यह सब केवल इस कारण हुआ कि कुछ लोगों ने इतिहास की गलत व्याख्या केवल बदला लेने, खून-खराबा करने की दृष्टि से की व इस गलत व्याख्या और गलत तथ्यों के आधार पर लोगों को भड़का दिया। दुनिया का इतिहास गवाह है कि जब भी ऐसा होता है तबाही ही होती है। बहुत पुराने उदाहरण याद करने की जरूरत नहीं है–हाल ही में यूगोस्लाविया में जो हुआ उसका उदाहरण हमारे सामने है। कुछ ही समय पहले तक इस देश की पहचान दुनिया में एक समृद्ध और खुशहाल देश के रुप में थी जिसके अनेक खूबसूरत स्थानों को देखने के लिये बहुत से पर्यटक यहां आते थे। यह सब तब संभव हुआ था जब इस देश को ऐसा नेतृत्व मिला था जिसने

विभिन्न समुदायों के लोगों को विश्व युद्ध और इसमें पहले की दुश्मनी को भुला कर जोड़ने के प्रयास किये थे। एक बार ऐसा नेतृत्व चला गया और पुरानी दुश्मनियों को भड़का कर लोगों को लड़ा दिया गया तो पूरा देश तहस-नहस हो गया। गृह युद्ध और आगजनी में हजारों लोग मारे गये तथा कुछ ही महीनों के समय में लगभग 25 लाख लोग शरणार्थी बन गये। एक तरह से हम कह सकते हैं कि कुछ समय पहले तक ही अमन-चैन के प्रतीक रहे इस देश ने बदले की भावना से वशीभूत होकर आत्म-हत्या कर ली।

बहुत दुख की बात है कि अपने संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों के लिये कुछ शक्तियां, जो बाहरी तौर पर देशभक्ति का दावा करती हैं, हमारे देश को उसी रास्ते पर धकेलना चाहती हैं जिस रास्ते पर जाकर यूगोस्लाविया तहस-नहस हुआ है। इसका प्रमाण है देश के भाईचारा पसन्द लोगों द्वारा बार-बार दी गई सलाह व चेतावनियों को ताक पर रखकर 6 दिसंबर 1992 को अयोध्या में बाबरी मस्जिद को गिराया गया।

पिछले कुछ वर्षों के तीखे और गहराते विवाद के कारण यह मस्जिद इस बात का प्रतीक बन गई थी कि इस देश में अल्पसंख्यकों के अधिकार सुरक्षित है कि नहीं। यही कारण था कि देश के अमन पसन्द लोगों ने बार-बार कहा कि इस मस्जिद की सुरक्षा की जाये, इसे कोई नुकसान न पहुंचाया जाये। लेकिन भाजपा समूह के स्वार्थी नेताओं ने लोगों में धार्मिक उन्माद भड़काकर मस्जिद को बहुत नुकसान पहुंचवाया तथा इसके साथ ही देश को एक सप्ताह के लिये बेहद दर्दनाक हिंसा में झोंक दिया।

लेकिन आज सब भारतवासियों का परम कर्त्तव्य है कि वे देश की एकता के लिये एक हो जायें और सांप्रदायिकता को वोटों में भुनाने वाले इन नफरत के सौदागरों को बता दें कि हम अपने देश को नहीं टूटने देंगे और एकता को बनाये रखेंगे। इसके लिये यह बहुत जरुरी है कि लोगों में बदले की भावना भरने वाले दुष्प्रचार का, जो कि भारतीय इतिहास और संस्कृति से एक बहुत बड़ा धोखा है, सामना किया जाये।

हमारे देश का इतिहास बताता है कि यहां विश्व के अनेक महान धर्म पनपते रहे हैं और जनसाधारण अलग-अलग धर्म अपनाते हुये भी आपसी मेलजोल से

रहते रहे हैं। इसका एक शानदार उदाहरण तो हम इस बात से देख सकते हैं कि कई हिन्दू तीर्थ स्थानों की शोभा में मुस्लिम कारीगरों का हाथ रहा है। समय-समय पर विभिन्न मुस्लिम राजाओं व नवाबों जैसे अकबर, जहांगीर, शाहजहां, टीपू सुल्तान, अवध के कुछ नवाबों आदि ने अनेक मंदिरों के लिये जमीन दी और मन्दिरों का निर्माण भी करवाया। इस तथ्य की पुष्टि करने वाले अनेक दस्तावेज देश के अनेकों मंदिरों, संग्रहालयों आदि में मौजूद हैं।

दूसरी ओर कुछ उदाहरण ऐसे भी जरूर हैं, जैसे कि दुनिया के हर देश में होता रहा है, कि एक धर्म के राजा ने दूसरे धर्म के लोगों से या उनके धर्मस्थलों से कुछ गलत व्यवहार किया, कभी धन लूटने के लिये, कभी किसी अन्य कारण से। कभी मुस्लिम राजा ने किसी हिंदू से गलत व्यवहार किया, कभी किसी हिंदू राजा ने बौद्ध धर्म के लोगों से गलत व्यवहार किया, कभी हिंदुओं के ही एक संप्रदाय के राजा ने किसी दूसरे संप्रदाय से किया। इतने लम्बे इतिहास में इस तरह का अनुचित कार्य करने वाले राजा सभी धर्मों में मिल जायेंगे।

सवाल यह है कि आज हमें पहली मेलजोल वाली संस्कृति को आगे बढ़ाना है या कि नफरत की उस सोच को आगे बढ़ाना है जो कुछ सिरफिरे राजाओं के संकीर्ण दृष्टिकोण से निकली थीं।

इस बात का सबसे अच्छा उत्तर दिया भक्ति सूफी आंदोलन के संत महात्माओं ने जिन्होंने जनसाधारण के साथ अपनी आवाज जोड़ी और सब तरह के पाखंडों से ऊपर उठकर आपसी भाईचारे और इंसानियत का संदेश दिया।कबीर, नानक, तुकाराम, प्राणनाथ, दादू, मीराबाई, रविदास आदि महान संतों और गुरुओं ने इस देश की धरती को ऐसी अमृतवाणी से सींचा जिससे आपसी प्रेम और भाईचारे की कलियां खिलकर लहलहाने लगी। धीरे-धीरे आरंभिक दिनों के शक दूर होने लगे और एक साझी संस्कृति विकसित होने लगी जिसमें पठान परिवार में जन्में रसखान श्रीकृष्ण के भजनों की रचना कर रहे थे और चैतन्य तथा सूफी प्रभाव के संगम से निकले बोल गीत बंगाल में गाये जा रहे थे।

इस भाईचारे की राजनीतिक अभिव्यक्ति भी समय-समय पर नजर आने लगी जब राणा प्रताप की ओर से सबसे बहादुरी से लड़ने वालों में हकीम खां सूर का नाम अमर हो गया और जब शिवाजी सलाह लेने के लिये बार-बार केल्सी के बाबा याकूत के पास जाने लगे।

अंग्रेज शासन आने के बाद भी यह भाईचारा बढ़ता गया। इसकी अभिव्यक्ति तब देखी गई जब वर्ष 1857 की स्वतंत्रता की लड़ाई में मुस्लिम सिपाहियों को कुछ जगहों पर अंग्रेजों के खिलाफ आरंभिक सफलता मिली तो इन जगहों पर उन्होंने गोहत्या बंद करवा दी। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के साथ रहकर अंग्रेजों से अंत कर लड़ने वाली उनकी बचपन की सहेली एक मुस्लिम महिला थी।

अंग्रेज शासक इस बात से बहुत चिंतित हुये कि हिंदू और मुस्लिम उनके खिलाफ एक होने लगे हैं और उन्होंने हिंदुओं तथा मुस्लिमों को बांटने के अपने प्रयास और तेज कर दिये। सेक्रेटरी आफ स्टेट वुड ने लार्ड एल्गिन को मार्च 3, 1862 को लिखे एक पत्र में कहा "हमने भारत में अपनी शक्ति एक हिस्से को दूसरे हिस्से से भिड़ाकर बनाये रखी है और हमें यही करते रहना चाहिये। अतः आप एक साझी भावना के विकास को रोकने के लिये जो भी कर सकते हैं करें।" सैक्रेटरी आफ स्टेट जार्ज फ्रांसिस हैमिल्टन ने 26 मार्च 1888 को कर्जन को एक पत्र लिखा जिसमें उसने कहा, "यदि हम शिक्षित भारतीयों को दो बहुत अलग विचार रखने वाले भागों में बांट सकें तो इस बंटवारे से हम अपनी स्थिति दृढ़ कर सकेंगे। हमें स्कूल शिक्षा की पाठ्य पुस्तकें ऐसी तैयार करनी चाहिये कि एक समुदाय और दूसरे समुदाय के अन्तर और बढ़ सकें।"

अंग्रेजी शासकों ने अपने इन विचारों को कार्यान्वित करने में कोई कसर न उठा रखी उस समय शिक्षा और विशेष कर इतिहास की शिक्षा की क्या गत बन चुकी थी इसका पता हमें मुंशी प्रेमचंद के इस संस्मरण से लगता है कि वे स्कूल में पढ़ाते समय अपनी ओर से पढ़ाते थे क्योंकि पाठ्य पुस्तकों में लिखी बातें तो गलत थीं पर बाद में यह कहने को मजबूर होते थे कि परीक्षा की दृष्टि से पाठ्य पुस्तक भी पढ़ लेना। बांटने और राज करने की इस नीति में अंग्रेजों को हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के साम्प्रदायिक संगठनों से पूरा प्रोत्साहन मिला। नतीजा यह हुआ कि अंत में देश का बंटवारा हो कर रहा। बंटवारे के बाद भी ये सांप्रदायिक ताकतें लोगों के दुख-दर्द का अनुचित लाभ उठाकर उन्हें बदले की भावना के इतिहास और इसी तरह की राजनीति में उलझाते रहे। इसका बहुत दुखद परिणाम यह हुआ कि हिंदू सांप्रदायिकता से ग्रस्त एक व्यक्ति ने महात्मा गांधी की हत्या कर दी। इस बारे में आर०एस०एस० के एक शीर्ष के नेता को लिखे पत्र में भारत के गृह मंत्री सरदार पटेल ने इस बात की कड़ी आलोचना की कि महात्मा गांधी की हत्या के बाद आर०एस०एस० के लोगों ने मिठाईयां बांटी थी।

सांप्रदायिकता के सौदागरों की आलोचना तो खूब हुई पर वे अपना कार्य आगे बढ़ाने में लगे रहे। इस कारण स्वतंत्र भारत में बार-बार सांप्रदायिक हिंसा हुई। फिर भी कुल मिलाकर सांप्रदायिकता के सौदागरों का राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने का सपना सफल नहीं हुआ और पिछले दशक के मध्य में वे संसद में मात्र दो सीटों तक सिमट कर रह गये। अब यह समय था जब अपनी दो सीटों की कुंठा से निकलने के लिये उन्होंने लोगों को भड़काने वाले कुछ मुद्दे तलाश करने आरंभ किये और जन्मभूमि के मुद्दे को अपने प्रचार का मुख्य केन्द्र बनाया। अयोध्या पर पालमपुर प्रस्ताव होने के बाद आडवाणी ने कहा कि जरुर इसे वोटों में बदला जा सकेगा तथा फिर कहा कि इस मुद्दे से चुनाव का परिणाम भाजपा के पक्ष में करवाने में बहुत सहायता मिलेगी। (फ्रंटलाईन अगस्त 28, 1992) केवल वोटों की इस राजनीति के कारण इतिहास को बदले की भावना से प्रचारित किया गया और लोगों को बिना किसी ठोस ऐतिहासिक प्रमाण के कहा गया कि इस जगह पर मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनायी गयी थी अत: इस मस्जिद को हटाना या तोड़ना जरूरी है। लोगों के धार्मिक उन्माद को इस हद तक भड़का दिया गया कि अंत में 6 दिसंबर को अयोध्या में एकत्रित लोगों ने सांप्रदायिकता की लहर में बहकर बाबरी मस्जिद को बहुत नुकसान पहुंचाया

आईये इस बात पर विचार करें कि अयोध्या में क्या हुआ ? पहली बात तो यह है कि एक धार्मिक स्थान को बहुत नुकसान पहुंचाया गया। दूसरी बात यह हुई कि हमारे अपने देश के कुछ नागरिकों के प्रति, जो एक अल्पसंख्यक धर्म के हैं, बेहद भड़काने वाले और गंदी जबान के नारे लगाये गये। यह धर्म की मर्यादा है कि जब ऐसी भाषा का उपयोग होता है तो उसके साथ दूर-दूर तक भगवान का नाम नहीं आना चाहिये पर इस गंदी भाषा के साथ-साथ ही भगवान की जय बोली गई। तीसरी बात यह है कि पत्रकारों पर हमला किया गया, अनेक पत्रकारों को घायल कर दिया गया, महिला पत्रकारों को भी नहीं बख्शा गया व एक महिला पत्रकार के तो वस्त्र भी फाड़े गये। यह सब सुनकर प्रत्येक हिन्दू का सिर शर्म से झुक जाता है कि हमारे धर्म के नाम पर क्या-क्या अनुचित कार्य किये गये। इतना ही नहीं यह सब करनेवाले तथा कथित धार्मिक लोग अल्पसंख्यकों की बस्तियों में गये और उनके मकानों को आग लगा दी। वीर हनुमान के हमारे धर्म की परंपरा तो यह रही है कि हम शक्तिशाली शत्रु की लंका में आग लगाते हैं पर धर्म को न समझने वाले इन लोगों ने अपने ही देश के कमजोर पक्ष के असहाय लोगों के घर को जला दिया जो एक शर्म की बात है।

आईये हम यह देखें कि क्या यह सब लेश मात्र के लिये भी हमारे महान धर्म की मर्यादा के अनुकूल था। सबसे बड़ा धर्म क्या है और सबसे बड़ा अधर्म क्या है, इसके विषय में तुलसीदास जी ने लिखा है,

परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई

अर्थात् दूसरे के हित के समान धर्म नहीं है अत: स्पष्ट है कि जो नफरत की विचारधारा फैला कर दंगे करवा रहे हैं ऐसे दंगे जिनमें हजारों लोगों को कष्ट होता है-वे गोस्वामी जी की मान्यता के अनुसार सबसे बड़ा अधर्म कर रहे हैं।

अन्यत्र तुलसीदास लिखते हैं–

सियाराम मैं सब जग जानी, करऊ प्रणाम और जुग जानी।

अर्थात् सीता और राम को मैंने समस्त प्राणी मात्र में जाना है, उसी प्राणी मात्र को मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूं। जो सीताराम के नाम का उपयोग किसी समुदाय के खिलाफ नफरत फैलाने के लिये करते हैं, उन्हें ये शब्द ध्यान से पढ़ लेने चाहिये।

भागवत पुराण में भक्त की एक प्रार्थना को प्रतिष्ठित किया गया है-

मुझे मोक्ष नहीं चाहिये, मुझे साम्राज्य भी नहीं चाहिये, जो दुखी जीव हैं उसके दुख का निवारण कर सकूं (बस यही चाहिये)

अब यह ध्यान देने योग्य बात है कि लोग इस बात से बेखबर हैं कि उनके द्वारा अपने आर्थिक और राजनीतिक लाभ साधने से कितने लोगों को दुख पहुंच रहा है, कितनों के घर उजड़ रहे हैं वे धर्म और भक्ति से कितने दूर हैं।

आज मूर्ति स्थापना की जगह को कितना महत्व दिया जा रहा है। पर उपनिषद में लिखा है-साधारण जन अपने देवताओं को जल में ढूढ़ते हैं, विद्वान आकाशीय पिंडों में, मूढ़ लकड़ी और पत्थर (की मूर्तियों) में पर ज्ञानी परम तत्व को अपनी आत्मा में ढूढ़ते हैं। योगी परम तत्व को आत्मा में देखते हैं मूर्तियों में नहीं। मूर्तियों की कल्पना इसलिये की गई है कि अज्ञानी उनकी सहायता से ध्यान कर सकें।

आगे हम भागवत के इन शब्दों को देखते है-

द्विजों का देवता अग्नि है, मनीषियों का देवता दिल है, अज्ञानियों का देवता मूर्ति है, ज्ञानियों के लिये ईश्वर सर्वत्र है। धार्मिक ग्रन्थ में यह बात स्पष्ट लिखी होने पर जो लोग मूर्ति और मन्दिर की जिद पर सैंकड़ों लोगों का घर उजाड़ने तक पर आमदा हो जाते हैं, उनकी धर्मनिष्ठा के बारे में हम क्या कहें ?

उत्तरकांड में नगरवासियों की सभा में गुरूजनों, मुनियों की उपस्थिति में कहे राम के उपदेश वचन दिये गये हैं। इनमें बताया गया है कि भक्त में कौन से गुण आवश्यक हैं व कौन सी बातों से भक्त को दूर रहना चाहिये। राम कहते हैं, "कहो तो, भक्ति में कौन सा परिश्रम है ? इसमें न योग की आवश्यकता है, न यज्ञ, तप, जप और उपवास की। (यहां इतनी ही आवश्यकता है कि) सरल स्वभाव हो, मन में कुटिलता न हो और जो कुछ मिले उसी में सदा संतोष रखे।" भक्त किन बुराईयों से दूर रहे, इस बारे में स्पष्ट कहा गया है, "न किसी से वैर करे, न लड़ाई-झगड़ा करे।" सबसे महत्वपूर्ण तो इससे अगली चौपाई है जिसमें राम कहते है, "संतजनों के संसर्ग (सत्संग) से जिसे सदा प्रेम है, जिसके मन में सब विषय यहां तक कि स्वर्ग और मुक्ति तक (भक्ति के सामने) तृण के समान हैं, जो भक्ति के पक्ष में हठ करता है, पर (दूसरे के मत का खंडन करने की) मूर्खता नहीं करता तथा जिसने सब कुतर्कों को दूर बहा दिया है।" इस तरह भक्त की परिभाषा की गई है।

यह स्पष्ट है कि अपने धर्म में आस्थावान लोगों व भक्तों की जो व्याख्या मानस में की गई है, उसमें दूसरे धर्मों या मतों के प्रति विरोध या वैर का थोड़ा सा भी स्थान नहीं है। सच्चा आस्थावान व भक्त व्यक्ति वही बताया गया है जो वैर व विरोध की भावनाओं से मुक्त हो।

आज जब रामजन्म भूमि विवाद के अन्तर्गत भारतवासियों को आपस में लड़ाया जा रहा है और श्रीराम के पवित्र नाम का उपयोग सांप्रदायिक लोगों द्वारा किया जा रहा है, यह याद करना आवश्यक है कि करोड़ों लोगों के प्रिय धार्मिक और साहित्यिक ग्रंथ रामचरितमानस में सांप्रदायिकता के विरोध में स्पष्ट संदेश दिया गया है।

श्रीराम का मानस में जो चरित्र बताया गया है, उसमें बार-बार कहा गया है कि वे दुख मिटाने वाले व करूणा के सागर थे। उनके चरित्र का जो वर्णन

किया गया है उससे स्पष्ट हो जाता है कि जनसाधारण के प्रति किसी प्रकार के भेदभाव, वैर, नफरत की भावना उनके लिये असहनीय थी। उनके लिये गरीब नवाज शब्द का उपयोग भी हुआ है और दीनदयाल शब्द का भी। उन्हें "क्रोध और भय का नाश करने वाले तथा सदा क्रोध रहित" कहा गया है। उनके नाम को सब भयो का नाश करनेवाला और बिगड़ी बुद्धि को सुधारने वाला बताया गया है। उनके नाम को 'उदार नाम' और 'कल्याण का भवन' भी कहा गया है। सुंदरकांड में उनके स्वभाव को "अत्यन्त ही कोमल" बताया गया है। श्रीराम के ऐसे चरित्र को किसी सांप्रदायिक सोच या प्रचार से जोड़ा जाये, यह सुबुद्धि से बाहर की चीज है।

जिन बातों का इतिहासकारों के अनुसार कोई आधार नहीं है, उसका दुरुपयोग परस्पर द्वेष फैलाने के लिये करने वाले लोग गोस्वामी तुलसीदास के ये शब्द (मानस में लिखे गये) भूल गये है-असत्य बोलने में जो पाप है तमाम पहाड़ों का झुंड भी उससे कम है। इन लोगों के बारे में हमें 'मानस' के यही शब्द ध्यान में आते हैं-देखने में तो सुन्दर हैं (धार्मिक बातें करते हैं) परन्तु मन गन्दा है जैसे कि विष से भरा घड़ा।

कुछ लोग जो भाईचारे की बातें करते रहे हैं वे भी इन दुष्टों के साथ हो लिये है। उनसे हम मानस के शब्दों में पूछना चाहते है

खल मंडली बसहू दिन राती, सखा धर्म निबहई केहि भांति,
अर्थात् दिन रात दुष्टों की संगति में रहते हो तो तुम्हारा धर्म कैसे निभता है।
ऐसे लोगों से तो दूर रहना ही धर्मोचित है मानस के शब्दों में,
आगे कह मृद वचन बनाई, पीछे अनहित मन कुटिलाई,
जाकर चित अहि गति सम भाई, अस कुमति परिहरेहि भलाई।

अब जरा मानस से हटकर एक अन्य महान संत कवि की वाणी पर ध्यान दें तो भाईचारे का संदेश हिन्दू मुस्लिम सन्दर्भ में और स्पष्ट रूप से मिला है। कबीर जी लिखते हैं-

हिन्दू तुरूक की एक राह है सतगुरू इहै बताई।
कहंहि कबीर सुनहु हो संतो, राम न कहेउ खुदाई।।

अत: हमारा धर्म तो यह सिखाता है कि किसी दूसरे धर्म से झगड़ा न करो। फिर भी अगर अयोध्या जैसा कोई विवाद हो ही जाता है तो उस विवाद पर ऐसा रुख अपनाना जिसमें बहुत से लोग मारे जायें व लाखों लोगों की आजीविका तहस-नहस हो जाये इसकी अनुमति तो हमारा धर्म कतई नहीं देता है। सबसे अच्छी बात तो यह है कि जिन दो धर्मों में विवाद हो रहा है उनके प्रतिनिधि आपसी बातचीत से इस मामले को सुलझा लें। यदि यह संभव नहीं होता है तो एक ही रास्ता रह जाता है कि देश में न्याय की जो प्रक्रिया है, जिसके शीर्ष पर सुप्रीम कोर्ट है, उसके माध्यम से फैसला करवाया जाये। देश के अनेक शीर्ष इतिहासकारों ने बार-बार कहा है कि विवादित स्थल पर मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनाई गई थी, इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है। फिर भी यदि यह बात भाजपा समूह के लोगों को मंजूर नहीं है तो वे इस पर न्यायालयों का जो फैसला हो कम से कम उसे तो स्वीकार कर लें।

आज सब जानते हैं कि सर्वोच्च न्यायालय और केन्द्रीय सरकार को जो वायदे उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार ने किये (कि वह मस्जिद की सुरक्षा करेगी) उनका पूरी तरह उल्लंघन हुआ। इतना ही नहीं, इससे पहले भाजपा समूह (भाजपा, विश्व हिंदू परिषद, आर०एस०एस०, बजरंग दल आदि) के अनेक नेताओं ने बार-बार कहा कि जन्मभूमि मन्दिर के मामले में वे किसी न्यायालय के निर्णय को स्वीकार नहीं करेंगे। अशोक सिंघल ने 25 जुलाई 1992 को कहा, "इस विषय पर जो भी निर्णय होगा वह केवल सरकार पर लागू होगा और हम पर लागू नहीं होगा।" जुलाई 31 को सिंघल ने कहा कि यह मुद्दा न्यायालय को सुपुर्द किया गया तो इसके विरुद्ध राष्ट्रव्यापी आंदोलन होगा। (फ्रंटलाईन अगस्त 28, 1992) विनय कटियार ने कहा (फ्रंटलाईन अप्रैल 24, 1992), बजरंग दल अध्यक्ष के रुप में मेरे लिये ताकत ही एकमात्र कानून है।" नवंबर 27, 1992 को कटियार ने कहा, "हम किसी न्यायालय के आदेश के बंधन में नहीं हैं.....यह सुप्रीम कोर्ट का काम नहीं है कि अयोध्या में क्या होता है इसका फैसला वह करे।.....सुप्रीम कोर्ट को दारोगा की तरह व्यवहार नहीं करना चाहिये।" (टैलीग्राफ, नवंबर 29)

सब समझदार भारतीयों को सोच-विचार करना चाहिये कि यदि कोई दूसरों के धर्म स्थल पर अधिकार का दावा करता है और साथ ही यह भी कहता है कि इस बारे में मैं न्यायालय के फैसले को नहीं मानूंगा, तो क्या हिंसा से बचा

जा सकता है। अयोध्या विवाद से कितनी हिंसा भड़की है यह सब जानते हैं पर भाजपा समूह तो देश को ऐसे अनेक विवादों में उलझाना चाहता है। अयोध्या के बाद 'काशी मथुरा बाकी है' का नारा वे बार-बार लगाते हैं। क्या यह राष्ट्रीय एकता और जनसाधारण की सुरक्षा और आजीविका के लिये एक बहुत बड़ा खतरा नहीं है ?

अयोध्या के अतिरिक्त जहां कहीं भी अन्य धर्म स्थलों को नुकसान पहुंचाया गया है, चाहे वे भागलपुर की मस्जिदें हो या कश्मीर के मंदिर हो, इस धार्मिक स्थलों को नुकसान पहुंचने वाली हर घिनौनी कोशिश की कड़ी आलोचना करनी चाहिये और हिंदुओं व मुस्लिमों को मिलकर इन धर्मस्थलों को दुबारा बनाना चाहिये। पाकिस्तान में या किसी भी मुस्लिम बहुल देश में मंदिर तोड़े जाते हैं तो उसका कड़ा विरोध हमारे देश के सब धर्मों के लोगों को मिलकर करना चाहिये।

भाजपा समूह के लोग कभी-कभी ऐसा दर्शाना चाहते हैं कि मंदिर टूटते या ऐसी किसी भी घटना का दुख केवल उन्हें होता है जबकि सच बात तो यह है कि हर हिंदू को (व अन्य धर्मों के बहुत से लोगों को भी) इस बात का उतना ही दुख होता है। अपने को हिंदू हितों का एकमात्र प्रतिनिधि बताने वाले लोग वास्तव में हिंदू हितों को ताक पर रखते है क्योंकि इस तरह तो हिंदुओं का हित चाहने वालों की संख्या कम प्रकट होती है। इतना ही नहीं, जिस तरह की घटनायें अयोध्या में 6 दिसंबर को हुईं व अनेक अन्य हिंसक वारदातों में भी हुईं, उससे हिंदू धर्म की मर्यादा में विश्वास रखने वाले सच्चे हिंदुओं को पता चल गया कि भाजपा समूह के लोग महान् हिंदू धर्म की सहनशीलता और भाईचारे की मर्यादाओं के प्रति कितने कम सचेत हैं।

जिस रास्ते पर भाजपा समूह चल रहा है वह हमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अलग-थलग कर देगा। किसी अन्य धर्म के उपासना स्थल पर हमला करने को पश्चिमी विकसित देशों के अधिकांश लोग एक बेहद असभ्य और बर्बर बात मानते हैं। अतः वहां का जनमत तो निश्चय ही हमारे खिलाफ हो जायेगा। हमारे आसपास के देशों में अधिकतर देश मुस्लिम बहुल देश हैं जिनमें अनेक देश हमारे मित्र देश रहे हैं। देश को तेल या पैट्रोल का बड़ा हिस्सा भी यहां से मिलता है। अब इन देशों में भी जनमत हमारे विरुद्ध होगा और पाकिस्तान को अपने

दुष्प्रचार में सहायता मिलेगी। सोवियत संघ के टूटने के बाद तो हमारे आसपास के मुस्लिम बहुल देशों में और वृद्धि हो गई है। मस्जिद टूटने से निश्चय ही हमारी अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर प्रतिकूल असर पड़ा है। भाजपा समूह के बारे में कई लोग समझते हैं कि इनकी सरकार बनी तो कम से कम इसराईल से इनकी दोस्ती होगी। पर भाजपा समूह के शीर्ष के एक नेता गुरु गोलवलकर ने अपनी एक मुख्य पुस्तक में हिटलर द्वारा यहूदियों की हत्या करने की प्रशंसा की है। अतः स्पष्ट है कि ऐसे लोगों के साथ इसराईल की भी दोस्ती कभी नहीं होगी व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत पूरी तरह अलग-थलग पड़ जायेगा।

हमें ऐसा नहीं होने देना है। हमें अपने महान देश को और महान बनाना है। हमें राष्ट्रीय एकता को और मजबूत बनाना है। हमें भाजपा समूह की और अन्य सब तरह की सांप्रदायिकता का डट कर सामना करना है।

HIGHLY RELEVANT BOOKS

By Bharat Dogra

C-27, Raksha Kunj, Pashchim Vihar, New Delhi-110063

1. The Challenge of the Last Decade. How the trust of Mother Earth has been betrayed? How famine in Africa and cancer in USA are related? How the tragic deaths of President Kennedy and President Allende are related? Why even the richest nations are in a crisis? Why the inequalities continue to grow? Why the 'new world' involves so much violence? These are the provocative questions with which this book on the present day international situation starts and goes on to examine the important economic, social, ecological and political issues facing the world today in detail. The failure of humankind in all important respects is emphasised, specially the lost opportunities of the 20th century. Finally the changes which are badly needed are spelled out in the last chapter on the "Challenge of the Last Decade". Price Rs. 150, $ 15 outside India. Pages 210.

2. India--Hope and Despair. Price Rs. 300, $ 20 outside India. Pages 340. This book starts with essays which stress the need for revising development concepts. Then India's economic, ecological, social and political problems are examined in this context. There are special sections on 'struggles' and 'aid and trade'. Despite dealing with many distressing issues, this is a book of hope, as it also outlines the steps which can be taken to significantly reduce this distress.

3. The Work and Life of Dr. R.H. Richharia. Price Rs. 100, $ 10 outside India. Pages 106. This is the inspiring story of an eminent scientist who defied imperialist interests to protect the interests of rice farmers of India. This book includes the text of an action plan for increasing rice productivity in India prepared by Dr. Richharia at the request of the Prime Minister's office. This book also raises some wider problems of farm research in India.

4. In the Interests of Interest—aid, trade, and debt in an

unequal world with special reference to the debt problems of India. Price Rs. 125, $ 10 outside India. Pages 125.

5. Empty Stomachs and Packed Godowns--Aspects of the Food System in India. 135 pages. This book, which covers a very wied range of issues on this subject, is a thought provoking study of the food and agriculture systems in India. The book questions several long-prevailing myths on food and agriculture front, and refutes these in a convincing way. The paperback edition is priced at Rs. 30 and the hardbound edition at Rs. 50. Abroad--Equivalent of 10 American Dollars.

6. Dams, Forests and survival in Tehri Garhwal. About 100 Pages. Price Rs. 70, $ 8 outside India. This book covers issue like deforestation, Himalayan ecology, chipko movement and Tehri dam.

7. Debate on Large Dams. About 100 pages. Price Rs. 70, $ 8 outside India. This book covers many important aspects of large dams with special reference to the situation in India.

8. Shahid Shankar Guha Niyogi and Chattisgarh Movement (Hindi and English) 12 poster size pages-Rs. 50 each (Please specify Hindi/English edition).

9. A set of 25 Poem Posters in Hindi--Rs. 60.

धर्म इतिहास और साम्प्रदायिकता	मूल्य रु. 7	पृष्ठ 48
पाठा-सूखे खेत प्यासे दिल	मूल्य रु. 5	पृष्ठ 21
अनेक धर्मों से बना एक महान् देश	मूल्य रु. 3	पृष्ठ 15
आखिर क्रान्ति का मतलब क्या है	मूल्य रु. 2	पृष्ठ 15
पर्यावरण कुछ बुनियादी सवाल	मूल्य रु. 2	पृष्ठ 16
सांप्रदायिक प्रचार का जवाब	मूल्य रु. 5	पृष्ठ 24

विद्या विवादाय धनं मदाय
शक्तिः परेषा परिपीडनाय।
खलस्य साधोः विपरीत मेतत्
ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।। १।।

दुष्ट लोगों की विद्या विवाद के लिए होती है।
उनका धन लोभ के लिए होता है।
उनकी शक्ति अपने से कमजोरों को परेशान
करने के लिए होती है। परन्तु सज्जन
पुरूष की विद्या ज्ञान बाँटने के लिए
होती है। उनका धन दान के लिए
होता है। उनकी शक्ति अपने से
कमजोरों की रक्षा के लिए होती है।